

जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

-प्रो. वीरसागर जैन

जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में जैन पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। पहले भी बहुत रहा है, आज भी बहुत है और आगे भी बहुत रहेगा। आज आवश्यकता है कि इस तथ्य को हम सभी और हमारी समाज का हर सदस्य भलीभांति समझे, ताकि जैन संस्कृति का क्षरण रुके और संरक्षण-संवर्धन हो।

जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में पत्र-पत्रिकाओं के विशेष योगदान को भलीभांति समझकर प्रत्येक जैन बन्धु को जैन पत्र-पत्रिकाओं को बहुत अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए। उनके सदस्य स्वयं भी बनना चाहिए और दूसरों को भी बनाना चाहिए अथवा अन्य किसी उपलक्ष्य में भी उनको कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य करना चाहिए। उनका यह सहयोग उनका अपना हित तो करेगा ही, इससे जैन संस्कृति की महती सेवा भी होगी। मैं समझता हूँ कि प्रत्येक जैन घर में चार-पांच पत्रिकाएँ अवश्य ही आनी चाहिए।

आजकल बहुत से लोग अनेक प्रकार के बहाने बनाकर पत्र-पत्रिकाओं से दूरियां बनाते देखे जा रहे हैं, उनकी सदस्यता छोड़ रहे हैं, आदि; परन्तु यह अच्छी स्थिति नहीं है। उन्हें बात को ठीक से समझना चाहिए। जैसे कोई कहता है कि उनकी अविनय होती है इसलिए नहीं मंगाते। यह बात ऊपर से देखने पर ठीक लगती है, परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। ऐसे ही अविनय नहीं होती है। अविनय तो अविनय करने से होती है, व्यर्थ ही आतंकित होना उचित नहीं है। संसार में लाखों पत्रिकाएँ छपती हैं, सब में महापुरुषों के चित्र एवं विचार होते हैं, परन्तु इससे उनकी अविनय नहीं होती, अपितु उनका प्रचार-प्रसार होता है, उनका महत्त्व बढ़ता है।

बहरहाल, यहाँ हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में जैन पत्र-पत्रिकाओं का कैसे बहुत बड़ा योगदान होता है। बातें तो बहुत हैं, पर हम संक्षेप में लिख रहे हैं। आशा है, सब लोग इन बिन्दुओं को विस्तृत करके गम्भीरता से समझने-समझाने का प्रयास करेंगे। यथा-

1. पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समाज में नये-नये कवि, लेखक एवं साहित्यकार तैयार होते हैं। जरा सोचिए, पत्र-पत्रिकाएँ न हों तो नये साहित्यकार कैसे तैयार होंगे ?
2. पत्र-पत्रिकाओं से तीर्थों का विकास होता है, उनकी अद्यतन जानकारी प्राप्त होती है, उन पर कोई संकट आया हो तो उसकी रक्षा होती है।
3. पत्र-पत्रिकाओं से बच्चों में धार्मिक संस्कार डलते हैं। वे आधुनिक ढंग से आकर्षक रूप में छपती हैं, उनमें अनेक प्रेरक प्रसंग आदि छपते हैं। उनसे बच्चों में बहुत संस्कार डलते हैं। मेरा अपना अनुभव है कि मुझे स्वयं बचपन में सन्मति-संदेश, आत्मधर्म आदि घर आते थे, उनको पढकर ही धर्म की रुचि जागृत हुई।
4. पत्र-पत्रिकाओं से समकालीन मिथ्या मान्यताओं का निराकरण होता है। यह कार्य केवल प्राचीन ग्रन्थों से सम्भव नहीं है। तथा यदि यह कार्य न किया जाए तो हमारे अनेक सामान्य लोग अपनी संस्कृति से भ्रष्ट हो सकते हैं।
5. पुस्तक समीक्षा से नई पुस्तकों/कृतियों का परिष्कार होता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी के द्वारा हिन्दी-साहित्य को अनेक श्रेष्ठ ग्रंथ और ग्रन्थकार दिए।

6. पत्र-पत्रिकाओं से धर्मप्रभावना आदि के समाचार पढ़कर बहुत प्रभावना होती है | एक स्थान के उत्तम कार्यों को जानकर अन्य स्थान वाले भी वैसा ही श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं |
7. पत्र-पत्रिकाओं से संस्थाएं उन्नति करती हैं, क्योंकि वे प्रायः किसी-न-किसी संस्था का मुखपत्र होती हैं | उसमें उनकी गतिविधियाँ प्रकाशित होना आवश्यक होता है |
8. पत्र-पत्रिकाओं से कोई भी अच्छा जन-जागरण-अभियान चलाने में सहायता प्राप्त होती है | भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव, आचार्य कुन्दकुन्द द्विसहस्राब्दी आदि अनेक कार्यक्रम पत्र-पत्रिकाओं की वजह से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए |
9. जैन संस्कृति केवल धर्म-दर्शन-अध्यात्मरूप नहीं है, अपितु न्याय, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, वास्तु, कला, समाज, राजनीति आदि जीवन के सभी पक्षों से सम्बंधित है | पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जैन संस्कृति की इस विविधता और व्यापकता पर अच्छा प्रकाश डाला जा सकता है |
10. आजकल विश्वविद्यालयों में बहुत शोधकार्य हो रहे हैं | यह पत्र-पत्रिकाओं का ही योगदान है कि वे उन शोधकार्यों से हमें परिचित कराती हैं | शोधार्थियों के शोध पत्र प्रकाशित करती हैं और इससे शोधकार्यों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है |
11. पत्र-पत्रिकाओं से सामाजिक एकता का भी वातावरण बनता है | पत्रकार बिना किसी भेदभाव के सभी के प्रेरक समाचारों से पाठकों को अवगत कराते हैं | इससे समाज के सभी अंग एक-दूसरे के निकट आते हैं, उनमें स्नेहभाव बढ़ता है |

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन में जैन पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान होता है | प्रत्येक जैन बन्धु का यह पावन कर्तव्य बनता है कि वह इन्हें प्रोत्साहित करे |

पत्रकार बन्धुओं से भी निवेदन है कि यद्यपि वे बहुत कठोर परिश्रम करते हैं, तथापि निम्नलिखित बातों का और भी अधिक ध्यान रखें | यथा –

1. सम्पादकीय अवश्य लिखा करें, बिना सम्पादकीय के अच्छा नहीं लगता, समसामयिक विषयों पर आपके अमूल्य विचार जनता के समक्ष अवश्य आने चाहिए | यदि किसी समसामयिक विषय पर न लिखें तो अन्य किसी सांस्कृतिक विषय पर ही सही, पर अवश्य लिखना चाहिए |
2. पत्रिका में 'पुस्तक-समीक्षा' का स्तम्भ भी अवश्य होना चाहिए, इससे साहित्य समृद्ध होता है | तथा 'पुस्तक-समीक्षा' में वास्तव में ही कुछ समीक्षा (गुण-दोष-विवेचन) भी अवश्य करनी चाहिए, केवल पुस्तक का परिचय मात्र लिख देने से कोई लाभ नहीं होता |
3. कहीं पर भी अभक्ष्य वस्तुओं के सेवन का कोई उपदेश या विज्ञापन भी नहीं देना चाहिए | कहीं-कहीं 'स्वास्थ्य-रक्षा' आदि स्तम्भों में गाजर, मूली, लहसुन, यहाँ तक कि शहद आदि के सेवन की सलाह दी जाती है | इससे बहुत दोष लगता है |
4. अधिक से अधिक समाचार कवर करें, चाहे संक्षेप में ही सही | दिगम्बर-श्वेताम्बर दोनों के प्रेरक समाचारों से जनता को अवगत कराया जाए तो यह भी अच्छा ही है | इससे समाज में स्वस्थ स्पर्द्धा एवं स्नेह भाव विकसित होता है |

5. वर्ष के अंत में समाज के विविध क्षेत्रों में कार्य करने वालों का सर्वेक्षण करके 'टॉप टेन' प्रकाशित करना चाहिए। जैसे - 'इस वर्ष के टॉप टेन लेखक'। यहाँ 'लेखक' के स्थान पर विद्वान्, कृतियाँ, दातार, संस्थान, समाजसेवक, पत्रिका, तीर्थ, तीर्थयात्री, इत्यादि। यह भी समाज की प्रगति का हेतु बनेगा।
6. यदा-कदा प्राचीन जैन स्थलों (मन्दिर, मूर्ति, तीर्थ, आदि) से भी पाठकों को अवश्य परिचित करना चाहिए। ये हमारी अमूल्य धरोहर हैं। चर्चा करते रहने से लुप्त नहीं होंगी।
7. कभी-कभी प्राकृत भाषा के उत्थान हेतु भी कुछ सामग्री प्रकाशित करना चाहिए, क्योंकि यह हमारे आगमों की मूल भाषा है। खासकर श्रुत पंचमी के अवसर पर तो अवश्य ही प्राकृत भाषा का महत्त्व समझाकर जनता को उसे सीखने की प्रेरणा देनी चाहिए। आपका यह कदम जैन संस्कृति की रक्षा में बहुत बड़ा योगदान करेगा।

अन्त में सभी जैन पत्र-पत्रिकाएँ उन्नति करें और उनके निमित्त से जैन संस्कृति का निरंतर संरक्षण-संवर्धन होता रहे- इसी मंगल कामना से मैं अपनी बात पूर्ण करता हूँ।